दिनांक-11-1-22 से आगे

गेने तथा कानबेक इस विचार से सहमत है कि शिक्षण के सिद्धान्तों को अधिगम के सिद्धान्तों पर आधारित किया जा सकता है, क्योंकि अधिगम शिक्षण पर आधारित है।

शिक्षण-प्रारूप को शिक्षण प्रतिमान कहते है तथा ये शिक्षण सिद्धान्त के लिए पद् परिकल्पना का कार्य करते है। प्रतिमान शिक्षण सिद्धान्त की पूर्व अवस्था है।

शिक्षण प्रतिमान का ~~अर्थ~~ परिभाषा [~~Meaning~~ of Teaching Model] Definition

प्रतिमान के उपरोक्त अर्थो को भली-भांति समझने के बाद शिक्षण प्रतिमान के अर्थ को समझना कठिन कार्य नहीं है। प्रतिमान के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने इसके अर्थ को स्पष्ट करने के लिए अपने-अपने विचार व्यक्त किए है जो निम्न है —

बी० आर० जुआइस ने शिक्षण प्रतिमान की परिभाषा इस प्रकार की है — " शिक्षण प्रतिमान अनुदेशन की रूपरेखा माने जाते है। इसके अन्तर्गत विशेष उद्देश्य प्राप्ति के लिए विशिष्ट परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है, जिसमें छात्र व शिक्षक की अन्त: प्रक्रिया इस प्रकार की हो कि उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।"

"Teaching Models are just instructional designs. They describe the process of specifying and producing particular environmental situations which cause the student to interact in such a way that specific change occurs in his behaviour."

— Bruce R. Joyce.

पाल डी. ईगन के अनुसार, " शिक्षण प्रतिमानों से अभिप्राय विशिष्ट अनुदेशात्मक लक्ष्यों को प्राप्त के लिए उपचारात्मक शिक्षण व्यूह रचनाओं से है।"

According to Paul de Eggen, " Models are prescriptive teaching strategies

दिनांक- 12.01.22
बी०एड० प्रथम सेमेस्टर
प्रश्न पत्र– चतुर्थ [शैक्षिक प्रौद्योगिकी व कम्प्यू. सह अनु०]

designed to accomplish particular instructional goals."

शिक्षण प्रतिमान तथा शिक्षण आव्यूह दोनो एक ही कार्य करते है। दोनों ही शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विशिष्ट शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करते है, परन्तु कोई भी शिक्षण आव्यूह मूल्यांकन प्रणाली को विकसित नहीं करती है। शिक्षण के लिए परीक्षण आवश्यक क्रिया मानी जाती है, बिना परीक्षण के शिक्षण प्रक्रिया अधूरी रहती है। शिक्षण प्रतिमान की मूल्यांकन प्रणाली महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार शिक्षण प्रतिमान परीक्षण को भी समान महत्व देते है और सहायक प्रणाली (Support System) को विकसित भी करते है। शिक्षण प्रतिमान शिक्षण आव्यूह की अपेक्षा अधिक व्यापक होते है।

शिक्षण प्रतिमान में शिक्षण की विशिष्ट रूपरेखा का विवरण होता है जिसके सिद्धान्तों की पुष्टि प्रयोगों के निष्कर्ष पर आधारित होती है। प्रतिमान का प्रारूप मुख्यतः छः प्रकार की क्रियाओं को सम्मिलित करता है। ये क्रियाएं निम्न हैं —

i) सीखने की निष्पत्तियों को व्यावहारिक रूप देना
ii) समुचित उद्दीपन की परिस्थितियों का चयन करना, जिससे छात्र अपेक्षित अनुक्रिया कर सकें।
iii) उन परिस्थितियों का विशिष्टीकरण करना, जिनमें छात्रों की अनुक्रियाओं को देख सकें।
) छात्रों की निष्पत्ति के लिए मानदण्ड व्यवहारों को निर्धारित करना।
) छात्र तथा वातावरण के मध्य अन्तःक्रिया की परिस्थितियों के लिए युक्तियों का विशिष्टीकरण करना।
) छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन होने पर परिस्थितियों तथा युक्तियों में सुधार तथा परिवर्तन करना।

शिक्षण प्रतिमान की स्वयं सिद्ध कल्पना यह है कि सीखने की निष्पत्तियों को अभिनिश्चित रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रत्येक उद्देश्य की प्राप्ति विशिष्ट परिस्थितियों के उत्पन्न करने से की जा सकती है।